आपदा में सामाजिक विज्ञान का चेहरा

अंजना त्रिवेदी

बेहतर सीखने-सिखाने के सन्दर्भ में यह हमेशा रेखांकित किया जाता रहा है कि बच्चों के अनुभवों को सुनना-समझना और उन्हें शिक्षण में जगह देना ज़रूरी है। अकादमिक दृष्टि के साथ ही साथ भावनात्मक दृष्टि से भी उनसे बातें करना, उनपर ग़ौर करना और यह समझना कि उनके इर्द-गिर्द क्या घटित हो रहा है; वे इसे कैसे देखते और समझते हैं। कोविड आपदा का दौर एक ऐसा जीवन प्रसंग है जिसमें सामाजिक विज्ञान की दृष्टि से जानने, समझने और अपनी शिक्षण योजना को सन्दर्भयुक्त बनाने और उसका प्रभाव जाँचने के तमाम मौक़े हैं। लेखिका ने इस आपदा की पृष्ठभूमि में सामाजिक विज्ञान शिक्षण की योजना और उससे जुड़े मसलों पर समालोचनात्मक चिन्तन को रेखांकित किया है। सं.

एक शिक्षक ने कहा, "स्कूल में तो फिर भी किताबें, ब्लैकबोर्ड, चाक, नक़्शे-चार्ट और ग्लोब रहते हैं। यहाँ मोहल्ला-मोहल्ला जाकर पढ़ाने की कुछ युक्ति ही नहीं सूझ रही है। सब तरफ़ अफ़रातफ़री है, लोगों की समस्याएँ हैं। पढ़ाने के बीच बहुत डिस्टरबेन्स भी होता है। कैसे पढ़ाएँ, क्या पढ़ाएँ?"

"ऐसे में क्या पढ़ाई और क्या प्रोजेक्ट। महामारी का डर है सो अलग। सरकार कह रही है जाकर पढ़ाओ। कुछ हो गया तो कौन ज़िम्मेदारी लेगा। सरकार तो नहीं करने वाली कुछ।"

इन दोनों बातों में शिक्षकों की बेबसी, उलझन, डर और तंत्र के प्रति अविश्वास-सा झलक रहा था। दरअसल हम सेमिनार के लिए शिक्षकों से उनके कक्षा शिक्षण के अनुभवों को लिखने, बच्चों के साथ प्रोजेक्ट करने, अपनी कक्षा योजना पर रिफ़्लेक्ट करने और फिर परचे के रूप में उसे प्रस्तुत करने की तैयारी करने के काम में लगे हुए थे, इसी दौरान उनकी ऐसी तमाम अभिव्यक्तियाँ सुनने को मिलीं।

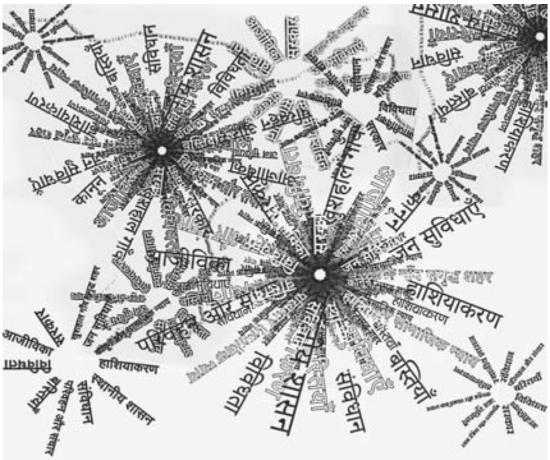
एक दिन अचानक एक शिक्षिका का फ़ोन आया, "मैम, लॉकडाउन के दौरान बच्चों को सामाजिक विज्ञान की पढ़ाई कैसे कराएँ? क्या टॉपिक पढ़ाएँ और कैसे पढ़ाएँ? मोहल्ला कक्षा में सभी बच्चे साथ में बैठ रहे हैं, सबका स्तर अलग-अलग है। ऐसे में बड़ी मुश्किल हो रही है। इस साल तो सामाजिक विज्ञान बिलकुल नहीं पढ़ाया जा सकेगा।"

सामाजिक विज्ञान की एक विद्यार्थी होने के नाते और पिछले लम्बे समय से अध्येताओं के साथ काम करते हुए ये समझ बनी है कि जीवन की जो भी उठा-पटक है, उसके तार कहीं-न-कहीं शिक्षा से जुड़े तो हैं। मसलन हम, हमारा परिवेश, हमारी पारस्परिकता, हमारे संघर्ष और चुनौतियाँ व इन सबके अन्तर्सम्बन्ध में राज-काज की व्यवस्था। इन सबसे मिलकर ही सामाजिक विज्ञान की पाठ्यचर्या बनी है। संकट के इस दौर में यह समझ और पुख़्ता ही हुई है। जन स्वास्थ्य, बीमारी, संक्रमण, भोजन, राहत सामग्री, पलायन यात्रा, शिक्षा, सरकार, साफ़-सफ़ाई, काम-धन्धे, बेरोज़गारी, मन्दी,

महँगाई, मीडिया, ग़रीबी, खेती-किसानी, ज़मीन विवाद, हिंसा, मवेशी, राशन वितरण, पुलिस। यह सबकुछ जो हम रोज़ाना अनुभव कर रहे हैं, बच्चे जो देख और समझ रहे हैं यह शिक्षा का ही हिस्सा है।

अगर हम सामाजिक विज्ञान की पाठ्यपुस्तक के अध्यायों को देखें तो उनमें आते हैं– सरकार, संविधान, विविधता, स्थानीय शासन, बस्तियाँ, परिवहन और संचार, आजीविकाएँ, ख़ुशहाल गाँव-समृद्ध शहर, हाशियाकरण, जन सुविधाएँ, क़ानून और सामाजिक न्याय, नगर व्यवस्था, व्यापारी, बाज़ार, वग़ैरह।

वैसे तो यह मुद्दे हमेशा ही मौजूद हैं लेकिन इस महामारी के दौरान इनमें से कई मुद्दे काफ़ी मुखर रूप से सामने आए और कई व्यक्तियों, बच्चों और परिवारों ने इन्हें अनुभव किया। इस समय में सामाजिक विज्ञान के इस व्यापक दायरे में शिक्षा लेने वाला विद्यार्थी इस दौर से क्या महसूस कर रहा है? इसमें उसका भविष्य किस प्रकार से दिख रहा है? इस पूरे दौर में सरकार, समाज, बाज़ार की क्या भूमिकाएँ रही हैं? उनके बारे में बच्चों की क्या समझ बनी है? इन सबका दस्तावेज़ीकरण कर और फिर उसका विश्लेषण करने से, आगे बच्चों के साथ किस तरह काम करना है इस बारे शायद हमें दृष्टि मिल सके।



चित्र : शिवेन्द्र पांडिया

बेहतर सीखने-सिखाने के सन्दर्भ में यह हमेशा रेखांकित किया जाता रहा है कि किताबी शिक्षा के बाहर बच्चों के अनुभवों को सुनना ज़रूरी है। अकादमिक दृष्टि के साथ ही भावनात्मक दृष्टि से भी उनसे बातें करना, उनपर ग़ौर करना और यह समझना ज़रूरी है कि इस दौर में उन्होंने क्या देखा। उनके मुखिया, पार्षद, स्थानीय प्रतिनिधि या ग्राम सभा की इस दौर में क्या भूमिका रही है? आसपास के नाते-रिश्तेदारों, पड़ोसियों ने किस प्रकार की मदद की। माता-पिता जहाँ काम करते थे वहाँ उनके रोज़गार की स्थिति क्या थी? राहत के लिए क्या मिला? काम से निकाल दिया या काम छूट गया तो फिर घर-परिवार का राशन पानी कैसे चला? यदि बच्चे गाँव चले गए तो कैसे गए? रास्ते में क्या देखा? गाँव में क्या हालात थे? रोज़ाना राशन की व्यवस्था कैसे बना रहे थे? स्वास्थ्य विभाग की टीम क्या आपके गाँव, मोहल्ले में जाँच करने आई थी? घर में कोई बीमार हुआ था तो आपने क्या किया? इस दौरान यातायात के साधनों की क्या उपलब्धता थी? इस आपात स्थिति में सरकार कहाँ-कहाँ दिखाई दी? इन स्थितियों में घर में निर्णय कौन ले रहा था? ये ऐसे प्रश्न और चर्चा के सूत्र हैं जो विषयों के अन्तर्सम्बन्धों को भी उजागर करते हैं और इन्हें गहराई से समझने का मौक़ा भी देते हैं।

एक स्कूली बच्चे के साथ हुई मेरी बातचीत के उदाहरणों से इसे समझने की कोशिश करते हैं :

बच्चे अचानक फ़ोन कर पूछ लेते हैं, "मैम, स्कूल कब खुल रहे हैं?" उनसे थोड़ी ही बात करो तो उनके घर का पूरा हाल बयाँ हो जाता है।

ऐसे ही एक बच्चे साहिल से बातचीत का एक अंश (दिनांक 3 जुलाई 2020, सुबह समय 9:00 बजे) :



चित्र : शिवेन्द्र पांडिया

साहिल : "गुड मार्निंग, मैम"।

मैं : "अरे कौन! साहिल!!"

साहिल : "मैम, आपने मेरी आवाज़ से ही पहचान लिया।"

(साहिल पिछले वर्ष कक्षा 8वीं का बच्चा रहा है इस वर्ष कक्षा 9वीं में प्रवेश किया है। पिछले वर्ष सामाजिक विज्ञान के बाल शोध मेले में वह काफ़ी उत्साह के साथ शामिल हुआ था।)

मैं : "अरे, तुम कैसे हो? क्या कर रहे हो?"

साहिल : "कुछ नहीं कर रहे हैं, मैम। यह स्कूल कब खुलेगा?"

मैं : "इसकी जानकारी तो मुझे नहीं है। लेकिन तुम तो अब बड़े स्कूल में जाओगे ना।"

साहिल (ख़ुशी से) : "हाँ मैम, पर स्कूल तो खुलें।"

मैं : "अच्छा, स्कूल में ऐसा क्या है? तुम स्कूल खुलने के पीछे पड़ गए हो।"

साहिल : "मैम, घर में अच्छा नहीं लग रहा है। दोस्तों से मिलने का मन है।"

मैं : "हाँ, दोस्तों को मिस कर रहे हो। घर में सब कैसे हैं? लॉकडाउन में क्या किया?"

साहिल : "मैम, घर में सबकुछ ठीक नहीं है। मार्च में पिताजी, हम भाई-बहन और माँ को छोड़कर कहीं चले गए हैं।"

मैं : "अरे! कहाँ और क्यों? फिर तुम्हारा घर कैसे चला?"

साहिल : "हाँ, उनका दिमाग़ ही ऐसा है कि वह हमें छोड़कर ही चले गए।"

मैं : "अरे! कहाँ गए? और इस दौरान तुम सबके राशन पानी की व्यवस्था कैसे हुई?"

साहिल : "थोड़ी दिक़्क़त तो हुई। मम्मी जहाँ काम पर जाती थीं वहाँ से भी पूरे पैसे नहीं मिले। राशन देने जो लोग आए शुरू में, वह राशन कार्ड माँग रहे थे। वह हमारे पास नहीं था। फिर दो-एक दिन हमने घर में ही पड़े चावलों की लापसी पी थी। हमारे स्कूल में पहले एक भैया थे। उनकी राशन की दुकान है। मैंने उन्हें फ़ोन किया और कहा कि हमें राशन चाहिए। उन्होंने कहा कि कल आकर ले जाना। मैंने कहा कि मेरे पास पैसा नहीं है। उन्होंने कहा कौन पैसा माँग रहा है? भैया बहुत अच्छे हैं। उनके यहाँ से राशन आया तब हमने पेटभर खाना खाया।"

मैं : "अभी क्या हाल हैं?"

साहिल : "अभी मैं फ़्री था तो उन भैया की दुकान पर काम कर रहा हूँ। इसके अलावा शाम को 100 रुपए की सब्ज़ी ख़रीदकर 125 रुपए और कभी 150 रुपए में बेच देता हूँ। तो थोड़ा कमा रहा हूँ।"

मैं : "मम्मी काम पर जा रही हैं क्या?"

साहिल : "हाँ, दूसरी जगह काम पर लगी हैं।"

मैं : "जब स्कूल खुल जाएँगे तो तुम काम छोड़ दोगे?"

साहिल : "मैम, स्कूल में पूरे समय के लिए नहीं जाऊँगा। काम तो करना ही होगा न। घर भी तो चलाना है।"

मैं : "फिर पढ़ाई का क्या?"

साहिल (उत्साह से) : "दोनों काम कर लूँगा न।"

मैं : "अच्छा। उधर आऊँगी तो फ़ोन कर लूँगी। अपन मिलेंगे।"

साहिल (उतावलेपन से) : "मैम, आप तो बता दीजिएगा, कब आ रही हैं? मैं स्कूल पहुँच जाऊँगा।"

मैंने भारी मन से फ़ोन रखा। मेरी आँखों के सामने साहिल दिख रहा था।

आसान शब्दों में *एनसीएफ़ 2005* की इबारत को मानें तो वह कह रही है– "सामाजिक विज्ञान, मानव एवं मानवीय सम्बन्धों एवं व्यवहारों का उसके समाज के सन्दर्भ में अध्ययन करता है। इससे समाज की किसी परिघटना (ऐसी घटना जिससे हमारा प्रत्यक्ष और अप्रत्यक्ष जुड़ाव रहता है और जिसे अनुभव करने का हमारा एक नज़रिया होता है) व घटनाक्रम (कई घटनाओं का सिलसिलेवार विवरण) का उसकी भौगोलिक, आर्थिक और राजनैतिक स्थितियों व ऐतिहासिक पृष्ठभूमि के सन्दर्भ में अध्ययन किया जाता है। समाजशास्त्रियों का मानना है कि मानव व्यवहार और सम्बन्धों को उसका परिवेश प्रभावित करता है। इसलिए समाज की किसी घटना को समझने के लिए विभिन्न विषयों के दृष्टिकोण को ध्यान में रखते हुए उसे समझना अधिक उपयुक्त होता है। इस प्रकार भूगोल, अर्थशास्त्र, सामाजिक-राजनैतिक (नागरिक शास्त्र) इत्यादि विषय सामाजिक विज्ञान से जुड़ते हैं''।

इसके अलावा, इस बात को आज ही समझने की ज़रूरत है कि इस आपदा में बच्चों ने सरकार के रूप में क्या देखा? क्या उन्हें सिर्फ़ पुलिस ही दिखाई दी? क्या स्थानीय सरकार या ग्राम सभा की आपातकालीन बैठक हुई या उनके यहाँ का कोई जन प्रतिनिधि आया था? यदि आया तो उसने किस प्रकार की मदद की? इसके अलावा घर में माता-पिता के रिश्तों को समझना, उनके अपने नाते-रिश्तेदारों और पड़ोस को भी अभी समझा जा सकता है।



चित्र : शिवेन्द्र पांडिया

बच्चों के रोज़ाना जिए हुए अनुभवों को संविधान के मूल्यों से जोड़कर देखा जा सकता है। इस प्रकार सामाजिक विज्ञान शिक्षण की बेहिसाब सम्भावना है, जिसे बच्चों के साथ देखा जा सकता है। इसकी रोशनी में स्थितियों के आलोचनात्मक चिन्तन के साथ सैद्धान्तिक और व्यवहारिक पहलू को देखा और समझा जा सकता है, उसका विश्लेषण और मूल्यांकन करवाया जा सकता है।

भोपाल से क़रीब 35 किमी दूर लाम्बाखेड़ा स्कूल में पढ़ने वाली टीना ने इस वर्ष 87 प्रतिशत अंकों से कक्षा आठवीं पास कर ली है। कोविड-19 के दौर में किए गए काम और घर की स्थिति के बारे में टीना ने फ़ोन पर बताया, "मैम, हम इसके पहले लॉकडाउन नहीं जानते थे। मुझे शुरू में लगा कि ऐसे ही कह रहे हैं शायद हमारे लाम्बाखेड़ा में इसका असर नहीं होगा। मेरे पिताजी ने दो साल पहले एक ऑटो ख़रीदा था। उसी से हमारा घर चलता था। यह ऑटो लोन पर ख़रीदा था। उसकी क़िश्त भी जाती है। एकदम लॉकडाउन से ऑटो नहीं चला पाए और हमारी कमाई का साधन एकदम ख़त्म हो गया। कुछ दिन तक घर में रखे राशन से काम चल गया। किन्तु फिर हमें समझ ही नहीं आ रहा था कि हम क्या करें? हमारे पास के मोहल्ले में अन्य समुदाय के परिवार रहते हैं। उनके समुदाय ने सुबह-शाम उनके लिए चौका (रसोई) लगाई किन्तु हमारे मोहल्ले में तो ऐसा कुछ नहीं था। एक बार, मैंने अपने पिताजी को कहा कि हम उनकी रसोई से खाना लेकर आ जाएँ तो पिताजी ने मना कर दिया और कहा कि वह साफ़-सफ़ाई से नहीं बनाते हैं।"



चित्र : शिवेन्द्र पांडिया

"फिर पिताजी को पता चला कि भोपाल में सब्ज़ी की क़िल्लत हो रही है तो उन्होंने एक पड़ोसी सब्ज़ी फ़ार्म वाले से चर्चा की। किसी साहूकार से 5000 रुपए उधार लेकर सब्ज़ी को ऑटो में रखकर भोपाल जाने लगे। इसके लिए मेरे पिताजी रात में ही फ़ार्म से सब्ज़ी लेकर रख लेते थे और सुबह 4:00 बजे ऑटो से निकल जाते थे। भोपाल के 10 नम्बर पर ऑटो खड़ा करके बिक्री करते थे। उस दौरान मुझे ख़ूब डर लगता था क्योंकि पुलिस बिना कारण ख़ूब मार रही थी। हम रात में 2:00 बजे उठकर खाना और चाय पन्नी में बाँधकर दे देते थे। जब तक पिताजी घर नहीं आते थे, हम डरते रहते थे।"

टीना ने आगे बताया, "उसके बाद सागर में एक एक्सीडेंट में मेरे मामा की डेथ हो गई। हमारे पास पैसा नहीं था। ऐसे में पापा ने ऑटो बेच दिया और कोई वाहन तो चल ही नहीं रहे थे। उस पैसे से पापा ने सागर के लिए गाड़ी की। हम सब गाड़ी से गए और वह पैसा गाड़ी में लग गया, वहाँ पुलिस को भी देना पड़ा क्योंकि दो समूह में झगड़े हो गए थे। नानी बूढ़ी हैं, उनके राशन पानी की भी व्यवस्था पापा को ही करनी थी। अब पापा कुछ नहीं कर रहे हैं। अभी उधारी से हमारा घर चल रहा है। अभी मैंने सिलाई करना सीख लिया है। मैम, मैं आगे पढ़ना चाहती हूँ किन्तु इस उम्र में पापा-मम्मी को परेशानी में भी तो नहीं देख सकते हैं। कक्षा 9वीं में एडमिशन के लिए 1100 रुपए लग रहे हैं। उसकी व्यवस्था भी करनी होगी।"

उसने उत्साह के साथ बताया, "मैंने पास वाली दीदी से 9वीं की किताब ले ली हैं। अभी मैंने घर में ख़ुद से पढ़ाई शुरू कर दी है। मैम, सामान्य दिन कब शुरू हो जाएँगे? सरकार हमारे लिए कुछ करेगी क्या?"

मैंने पूछा : "क्या करेगी?"

टीना के कहा : "जैसे पापा के रोज़गार के लिए सब्सिडी में पैसा देगी। मेरे लिए स्कॉलरशिप या हम सब के लिए राशन पानी की व्यवस्था।"

मैंने पूछा : "अभी राशन की क्या व्यवस्था है?"

उसने बताया : "केवल 10 किलो चावल, 10 किलो गेहूँ और 2 किलो चना मिला है सरकारी राशन की दुकान से। इसके अलावा कुछ नहीं दिया। पास वालों को तो खाने का तेल और शक्कर भी मिली है, हमें क्यों नहीं? इसकी शिकायत कहाँ कर सकते हैं मैम? पर, शिकायत के बाद तो जो मिल रहा है यह भी नहीं मिलेगा न।"

न समाज उन्हें सुरक्षा और उम्मीद का बेहतर वातावरण दे पा रहा है और न ही सरकार अपने होने का अहसास करा पा रही है। बच्चों के सामने आई चुनौतियों और असुरक्षा के माहौल में उन्हें अगर कहीं भी न्याय मिलने की उम्मीद है तो शायद शिक्षक और स्कूल दिखाई देता है। जहाँ उन्हें गाइडेंस मिल सके कि राशन के लिए किसके पास जाएँ? क्या आवेदन लेकर जाया जा सकता है? इसके अलावा, शिक्षक उनकी समस्या सुनकर गाँव के सरपंच को बुलाकर या पास के थाने से पुलिस को बुलाकर कुछ मदद कर सकते हैं। कुछ नहीं तो प्यार से दो बातें करके दिलासा दे सकते हैं कि जल्दी ही सब ठीक होगा।

माध्यमिक स्कूल में सामाजिक विज्ञान के समाजशास्त्रीय पहलुओं को देखना और समझना, इसके प्रायोगिक महत्त्व को स्थान देना बहुत ज़रूरी है। पाठ्यपुस्तक में दिए गए सैद्धान्तिक पहलुओं को बस बता देना सामाजिक विज्ञान शिक्षण नहीं कहा जा सकता। एक शिक्षक की भूमिका है कि वह बच्चों को आज की स्थिति से अवगत कराते हुए पाठ्यक्रम में उल्लेखित सैद्धान्तिक पहलुओं पर रोशनी डाले। शायद मृत बनाए गए सामाजिक विज्ञान को इसी प्रकार जीवन्त बनाया जा सके। मुझे लगता है इसी तरह से सही मायने में बच्चे आलोचनात्मक चिन्तन, विवेचना और विश्लेषण से गुज़र सकेंगे। बच्चे भी देख सकें कि शिक्षण के दौरान समाज और राष्ट्र के लिए जिस ज़िम्मेदार नागरिक को गढ़ने की बात की जाती है वह ज़िम्मेदार नागरिक है कौन? यह समझ सकें कि शब्दों में ज़िम्मेदार नागरिक और पारस्परिक समाज नहीं ढाला जा सकता। बच्चों के उदाहरण के लिए ही कोई ज़िम्मेदार नागरिक और परस्पर सम्बन्धों वाला समाज कहीं दिखना भी तो चाहिए।

ऐसे में ही उन्हें केन्द्र सरकार, राज्य सरकार और स्थानीय सरकार, सार्वजनिक वितरण प्रणाली, सरकार की ज़िम्मेदारी वाले स्वास्थ्य और शिक्षा के कार्य और दायित्व, न्यूनतम मज़दूरी, समाज के आपसी सम्बन्ध, साहूकार के ब्याज की राशि, पुलिस के पहरे, हिंसा आदि की अवधारणाएँ समझाई और उनकी नज़र से समझी जा सकती हैं। इस साल बच्चों की बातों को सुनना एवं समझना और उसी आधार पर उनके इस बार के प्रश्नपत्रों को तैयार करना फिर उनके अनुभवों के आधार पर आकलन ही सही मायने में पढ़ाई होगी।

अगर हम अक्षर ज्ञान और पाठ्यपुस्तकीय ज्ञान को थोड़ा किनारे कर इन बच्चों के मन-मस्तिष्क में बैठे शब्दों और अनुभवों को बाहर आने का मौक़ा दें। देखें कि बच्चों के अनुभव क्या आकार ले रहे हैं? भारी-भरकम अवधारणात्मक शब्दों और उनकी परिभाषाओं को सिखाने से पहले उन्हें अभिव्यक्ति का मौक़ा दें। अभिव्यक्ति में अधिकार और उनके न्यायिक मूल्यों को संरक्षित करने का बीड़ा भी उठाएँ। यह चर्चा करें कि सैद्धान्तिक और व्यवहारिकता में क्या अन्तर है? तो हम सामाजिक विज्ञान शिक्षण को कुछ अर्थपूर्ण बना सकेंगे। समता, बन्धुत्व, सामाजिक पारस्परिकता, लोक कल्याणकारी राज्य, व्यक्ति की गरिमा, जीवन का अधिकार, यही सब सामाजिक विज्ञान का विषयक्षेत्र

है। इस दौर में भी बच्चों की शिक्षा, शिक्षण पद्धतियों, कक्षा में हुई चर्चाओं और जीवन से किताब के जुड़ावों और उसके अनुभवों का दस्तावेज़ बनाया जाना चाहिए। तभी समझा जा सकेगा कि सामाजिक विज्ञान का चेहरा-मोहरा कैसा दिखता है।

सन्दर्भ :

1. *एनसीएफ़ 2005*, एनसीईआरटी, नई दिल्ली
2. *सामाजिक विज्ञान शिक्षण पर राष्ट्रीय फ़ोकस समूह का आधार पत्र 2005*, एनसीईआरटी, नई दिल्ली
3. *हमारे अतीत, सामाजिक एवं राजनीतिक जीवन* और भूगोल की पाठ्यपुस्तकें, कक्षा 6, 7 एवं 8, 2006, एनसीईआरटी।

अंजना त्रिवेदी विगत ढाई दशकों से सामाजिक क्षेत्र में सक्रिय हैं। शिक्षण-प्रशिक्षण के साथ ही पत्र-पत्रिकाओं के लिए सतत लेखन रहा है। महिला स्वास्थ्य, शिक्षा एवं नागरिक अधिकार इनके प्रमुख विषय रहे हैं। अंजना वर्तमान में अज़ीम प्रेमजी फ़ाउण्डेशन, भोपाल, मध्यप्रदेश में सामाजिक विज्ञान स्रोत व्यक्ति के रूप में कार्यरत हैं।

सम्पर्क : anjana.trivedi@azimpremjifoundation.org